जगद्गुरु श्रीगौरकिशोर दास बाबाजी महाराज

(शिक्षा समन्वित जीवनी)

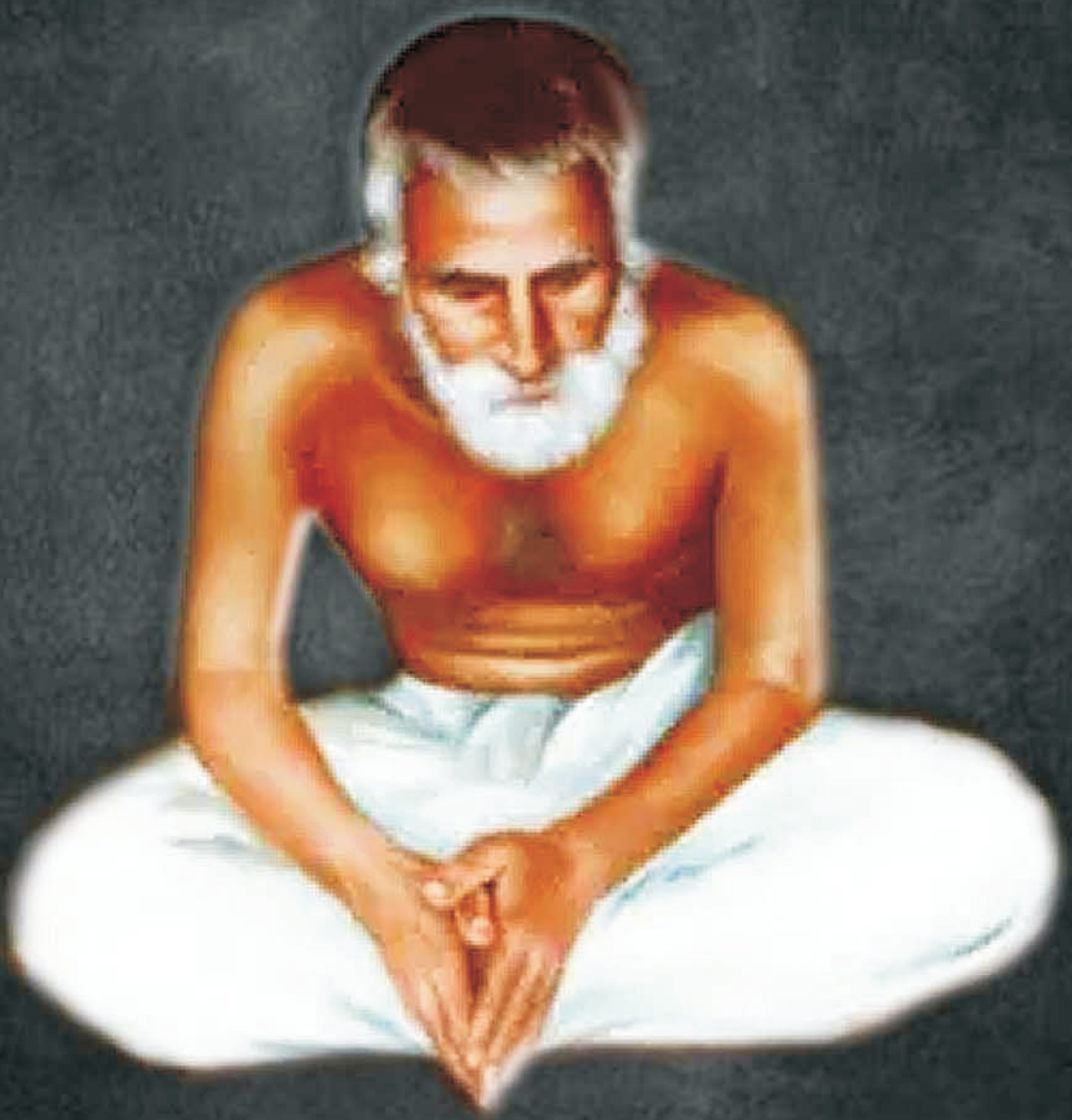

श्रील प्रभुपाद भक्ति सिद्धान्त सरस्वती ठाकुर जी की दिव्य लेखनी से संकलित

SGD

जगद्गुरु श्रीगौरकिशोर

“गृहेते गोलोक भाय”
गृह में गोलोक का
प्रकाशित होना

श्रीगुरु-गौरोगौ जयतः

श्रील बाबाजी महाराज ने एक बार कहा था- "पैखाना में रहकर कभी भी हरिभजन नहीं किया जाता।" बाबाजी महाराज की इस बात का तात्पर्य पास बैठे व्यक्ति समझ नहीं पाए हैं, यह देखकर उन्होंने कहा- "जो सब घर केवल 'खाने-पीने' आदि बातों

में ही पूर्णतयः व्यस्त हैं और जिन सब स्थानों में केवल काम पूर्ति करने के उद्देश्य से ही कार्य चलते हैं, यह सब घर ही बाहरी दृष्टि से मन्दिर के समान दिखने पर भी साधु-वैष्णवों के स्थान नहीं है। कामी लोग बाहरी दृष्टि से मन्दिर में रहने का अभिनय करने पर भी विषय विष्ठा के कुण्ड में वास करते हैं, और जो निष्कपट भाव से अप्राकृत आश्रय विग्रह की सेवा करते हैं, वे कहीं पर

भी रहें, वही राधाकुण्ड है।" यह बात कहने के कुछ दिन बाद नवद्वीप की धर्मशाला के अधिकारी ज़मीनदार, गिरीश बाबू, एक दिन अपनी पत्नी के साथ बाबाजी महाराज के दर्शन करने के लिए आए। गिरीश बाबू की पत्नी ने अत्यन्त कातर भाव से बाबाजी महाराज को कहा– 'बाबाजी महाराज आप आदेश करिए– आपके भजन के लिए एक छोटी सी भजन कुटीर का निर्माण करवा

दें। आप सर्दी और वर्षा के समय छप्पड़ में रहकर बहुत कष्ट उठा रहे हैं। इसे देखकर हमारा हृदय बहुत दुःखी है।'

बाबाजी महाराज ने कहा– "छप्पड़ के नीचे रहने में मुझे लेशमात्र भी कष्ट नहीं होता। मुझे एक कष्ट है, यदि आप सहायक होंगे, तभी बोल सकता हूँ। बहुत लोग कपटतापूर्वक मेरे पास आकर हमेशा 'कृपा करो, कृपा करो' कहकर मुझे भजन नहीं करने

देते। वे अपना मंगल नहीं चाहते किन्तु दूसरों के भजन में भी विघ्न उत्पन्न करते हैं। आपके पैखाने की कोठरी यदि मुझे दान कर दें, तब वह स्थान मेरे भजन के परम अनुकूल होगा। मैं इस स्थान में रहकर दिन रात हरिनाम कर सकूँगा। लोग ऐसे स्थान पर जाने में घृणा अनुभव करेंगे। यदि ऐसा नहीं हो सके, तब मुझे किसी प्रकार की बातें कहकर मेरे दुर्लभ मनुष्य जीवन का समय नष्ट

नहीं कीजिए।'

यह सुनकर गिरीश बाबू की पत्नी ने कहा– "बाबाजी महाराज, आपने जो कहा है, वह हमको शिरोधार्य है, लेकिन शौचालय का स्थान साधु को प्रदान करने से मेरे पापों की तो सीमा नहीं रहेगी।" बाबाजी महाराज ने कहा– "मैं साधु नहीं हूँ, जो मन्दिर-देवालयों के महान्त हैं, या जटा-बल्कलधारी (पेड़ की छाल का कपड़ा) हैं, वे ही साधु हैं।

मेरा हरिभजन नहीं हुआ, पैखाना ही मेरा उचित स्थान है। यदि आप यह दे सकते हैं, तभी बात कीजिए नहीं तो मुझे आपकी कोई बात नहीं सुननी है।" लाचार होकर गिरीश बाबू और उनकी पत्नी उस बात पर स्वीकृत हो गए एवं कहने लगे– 'आप कोठरी में नहीं रहने पर भी जो आपकी सेवा करेंगे, उनके लिए दो कोठरियाँ रहें।' गिरीश बाबू ने शौचालय के भीतर गोबर आदि के द्वारा

परिष्कार करवाकर राजमिस्त्री को बुलाकर सम्पूर्ण रूप से नया करवा दिया। लेकिन बाबाजी महाराज जी यह जानकर बाद में कोठरी में न जाएँगे, इसलिए अन्दर का कुछ हिस्सा ठीक रखकर केवल मात्र परिष्कार करके इस स्थान पर आसन बनवा दिया। भगवद-भक्ति के छल में कनक कामिनी प्रतिष्ठाशा, विष्ठा से भी अधिक दुर्गन्धमय है– यह प्रकाशित करने के लिए

श्रीगौरकिशोर दास बाबाजी महाराज ने धर्मशाला के साधारण मल-मूत्र त्याग करने के स्थान में छः मास तक वास किया था।

इस घटना में एक विषय पर ध्यान देना आवश्यक है कि, बाबाजी महाराज बाहरी दृष्टि से ही पैखाना में रह रहे थे—यह तो केवल जगत के कपटी व्यक्तिों को वचित करने के लिए। लेकिन असली

बात तो यह है कि, बाबाजी महाराज किसी भी समय पैखाना में नही रहे–पैखाना तो विषयी लोगों का ही स्थान है। वे लोग कहीं भी रहें, वह पैखाना ही है। परन्तु बाबाजी महाराज पैखाना में नहीं, बल्कि राधाकुण्ड में ही रहे और हमेशा ही रहते थे। यही उनका वैशिष्टय है।

श्रीलगुरुदेव